पाठ का सारांश

गांधी जी को बचपन मे पेड़ पर चढ़ने का शौक था लेकिन उनके पिताजी को डर लगता था की कहीं गांधि जी पेड़ से गिर न जाए। एक दिन वे छुपकर पेड़ पर चढ गए। उनके बड़े भाई ने उन्हें देख लिया और गांधि जी को पैर को खींच कर एक थप्पड़ लगाया। गांधी जी ने उनके माँ से शिकायत की की उन्हें बड़े भाई ने उन्हें बिना

बाल का माथ। माँ ने कहा की जरूर तुमने कोई शरारत की होगी। गांधी जी ने कहा की उन्होंने कोई शरारत नहीं की, बस पेड़ पर चढ़कर हवा का आनंद ले रहे थे। माँ ने कहा की वे भी जाके बड़े भाई को थप्पड़ मारे। गांधी जी ने कहा की वे उनसे बड़े हैं। वे उनको थप्पड़ नहीं मार सकते। फिर गांधि जी ने कहा माँ आप जो मारते हैं आप उन्हें क्यों नहीं रोकते हैं? और मुझे मारना सिखाते हो। गांधि जी की यह घटना हमें सिखाते हैं की हींसा से नहीं बल्की अहिंसा से भी बदला लिया जा सकता है।